Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN(o): 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 7.384
Volume - 8, Issue - 4, April - 2025

DOIs:10.2018/SS/202504008 --:-- Research Paper / Article / Review

भोजपुरी लोकगाथा 'लोरिकायन' के पात्रों का चरित्र विश्लेषण

रवि प्रकाश सूरज
शोधछात्र, स्नातकोत्तर भोजपुरी विभाग
वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा, बिहार
Email – raviprakashsuraj@gmail.com

शोध सार :- भारतीय लोकसाहित्य की समृद्ध परम्पराओं में लोकगाथाओं की परंपरा युगों-युगों से समाज में मौखिक परंपरा के रूप में विद्यमान है। भारतीय लोकगाथाओं में 'लोरिकायन' की गाथा पश्चिम के राजस्थान से लेकर उत्तर प्रदेश, बिहार, बंगाल तक विविध रूपों में सुनी-सुनाई जाती रही है। पर मूलतः इस लोकगाथा को भोजपुरी भूमि की लोकगाथा माना गया है। इस विशालतम महाकवि का नायक वीर लोरिक अहीर जाति का था। वीर व्यक्तित्व, सामंती व्यवस्था के विरोधी, नारी उद्धारक वीर लोरिक यदुवंशियों के अलावा अन्य पिछड़े समुदायों में वीर लोरिक देव की तरह पूजे जाते रहे हैं। लगभग 42 हजार पंक्तियों में संकलित इस लोकगाथा में वीर लोरिक के अलावा कई अन्य पात्र आए हैं जिनका चरित्र और कृत्य अनुकरणीय तथा जनमानस के लिए प्रेरक है। प्रस्तुत शोधपत्र में भोजपुरी 'लोरिकायन' के विविध पात्रों का चरित्र विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है।

बीज शब्द : लोरिक, लोरिकायन, लोकगाथा, लोकसाहित्य, भोजपुरी ।

भोजपुरी लोकसाहित्य की वाचिक परंपरा बहुत समृद्ध और विशाल रही है। भोजपुरी लोकसाहित्य की विविध विधाओं यथा लोकगीत, लोककथा आदि के संकलन की दिशा में हाल के वर्षों में वृहद प्रयास हुये हैं जिनके परिणामस्वरूप मौखिक परंपरा में चली आ रही इन विधाओं का प्रकाशन संभव हो पाया है। भोजपुरी लोकगाथाओं की परंपरा में 'लोरिकायन' सबसे प्रचलित और विशालतम महाकाव्य है। इसके लिपिबद्ध संस्करण में 42 हजार से ज्यादा पंक्तियाँ हैं। 'लोरिकायन' का सबसे पहला प्रकाशित संस्करण 1980 ई. में लोकरुचि प्रकाशन, सोनभद्र से छपा जिसका संकलन डॉ अर्जुनदास केसरी ने किया था। इसके बाद 'लोरिकायन' के और भी संस्करण प्रकाशित हुये। यूँ तो 'लोरिकायन' की लोकगाथा सम्पूर्ण उत्तर भारत में प्रचलित है मगर इस गाथा में वर्णित स्थानों के भौगोलिक और ऐतिहासिक विश्लेषण से यह स्थापित हो चला है कि इस लोकगाथा की उद्गम भूमि भोजपुरी भाषी प्रदेश ही है। 'लोरिकायन' की गाथा अहीर/आभीर जाति के नायक लोरिक पर केन्द्रित है जिसे गाथा में वीर व्यक्तित्व, सामंती व्यवस्था के विरोधी, नारी उद्धारक तथा आदर्श प्रेमी और पति के रूप में चित्रित किया गया है। वीर लोरिक को 'लोरिक देव' के रूप में यदुवंशियों के अलावे अन्य पिछड़े समुदायों, अनुसूचित जाति के समुदायों तथा कहीं-कहीं ब्राह्मणों द्वारा भी उपासना की जाती रही है। आज भी इस प्रदेश के अनेक भागों में वीर लोरिक की प्रतिमाओं की स्थापना और उपासना की जाती है। 'लोरिकायन' लोकगाथा में वीर लोरिक के अलावे कई अन्य पात्रों का भी समावेश हुआ है जिनका चरित्र और कृत्य स्वीकार्य, अनुकरणीय और लोक के लिए प्रेरक है।

'लोरिकायन' गाथा की चरित्र-योजना:- 'लोरिकायन' महागाथा के चरित्रों को तीन भागों में बांटा जा सकता है।
1. मुख्यपात्र- (क). नायक लोरिक, (ख). नायिका मंजरी, (ग). खलनायक मोलागत

2. सहपात्र- (क). नायक लोरिक के सहपात्र महरा, गंगिया नाई, संवरू, कठयित, बंठवा, सेनहिया, झीमल, अभोरिका, बीजवा और सहायक देवता ब्रह्मा तथा दुर्गा, शंकर और अन्य देवी-देवता (ख). नायिका मंजरी के सहायक पात्र सुवाचन, महरिन, उसके पिता महरा, अनपी, मोहिनी पंडित, हंस का जोड़ा, मंजरी की सखियाँ तथा अन्य देवी-देवता। (ग). खलनायक मोलागत के सहायक पात्र राजा बमदेव, ब्रह्मजी, नोना चमारिन, मरदमल, राजा सखलेश, बघेल राजा, दानव, डाइन, सतिया, राजा निरमल आदि।
3. अन्य पात्र- इन पत्रों के अतिरिक्त जो पात्र गाथा में आए हैं उनमें इनरावत हाथी, सहदेव राजा, चनवा, मंगरा घोड़ा, हरेवा-परेवा, कोल, बोलारख, देवाइच, नाग, सुकुली कुतिया आदि।

आगे इन पात्रों का चरित्र-विश्लेषण विस्तार से किया जा रहा है।

1. नायक लोरिक:- 'लोरिकायन' लोकगाथा की कथा वीर नायक लोरिक पर केन्द्रित है। लोरिक एक महान वीर, पराक्रमी विजेता, अतुलित बलवान तथा आकर्षक व्यक्तित्व का स्वामी है। वह बाल्यावस्था से ही अत्यंत वीर और सबके खासकर नायिकाओं के आकर्षण का केंद्र रहा है। वह गउरा का निवासी है जहाँ उसका पूरा परिवार पशुचारण और पहलवानी करता है। उसका पूरा परिवार तथा परिवेश मध्यकालीन सामंतवादी व्यवस्था का द्योतक है। गाथा के प्रथम खंड से ही उसके हठी, अभिमानी, आत्मविश्वासी और बलशाली होने का प्रसंग मिलता है। इसके बावजूद उसका चरित्र यथार्थवादी और सहज है। उसके बलिष्ठ शरीर की तुलना भादों के उन्मत्त भैंसे से की गयी है। पैर के एक प्रहार से ही मजबूत दरवाजे का खुल जाना उसके बल का प्रथम परिचय है। आगे लोरिक की वीरता का विशेष परिचय कोटा के राजा से उसके युद्ध में मिलता है। वह युद्ध में विजयी होता है। लोरिक चूंकि दुर्गा का उपासक है इसलिए दुर्गा अनेक युद्धो और अवसरों पर लोरिक की सहायता करती हैं। लोरिक वीर और साहसी होने के साथ मददगार भी है। एक प्रसंग में सोन नदी में नाव डूबते वक्त लोगों के सहायतार्थ दुर्गा का नाम लेकर नदी में कूदकर सबको बचाने का वर्णन है। कुछ प्रसंगों में लोरिक का पराक्रम गौण तथा दुर्गा के अवलंब को मुख्य दिखाया गया है। गिलास की प्राप्ति के लिए दुर्गा के पंखों पर बैठकर उसका यात्रा करना भी एक ऐसा ही प्रसंग है। लोरिक के चरित्र में कहीं-कहीं मानवीय दुर्बलताएं भी प्रदर्शित की गयी हैं जैसे कोटा युद्ध में उसकी घबराहट, नायिका को चोरी-छिपे देखने का प्रयास आदि। हालांकि लोरिक को कामी व्यक्ति के स्थान पर चरित्रबल से परिपूर्ण नायक के रूप में प्रदर्शित किया गया है। कई स्त्रियाँ उस पर मोहित होती हैं मगर लोरिक पर उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता। 'लोरिकायन' लोकगाथा में कई युद्धों का वर्णन है मगर हर युद्ध में अपनी वीरता और पराक्रम के बल पर लोरिक ही अंततः विजयी होता है। इन प्रसंगों में में मरदमल के साथ युद्ध, राजा निरमल के साथ भीषण संग्राम, मार्कुंडी घाट पर मंजरी के कहने पर पत्थर को तलवार के एक वार से दो टूक करना शामिल है। लोरिक एक धुन का पक्का और कठिनाइयों को नज़रअंदाज़ करने वाला नायक है। वह वीर होने के साथ-साथ उदार हृदय भी है। हंस की पीठ पर बैठकर सात समुंदर की यात्रा करने के एवज में वह हंस के जोड़े को अपनी जांघ का मांस काटकर दे देता है। गाथा के एक खंड में लोरिक एक परकीया नारी चनवा से प्रेम करने लगता है क्योंकि उसे लगता है कि चनवा के रिक्त जीवन में प्रेम की अतिशय कमी है। बावजूद इसके वह कभी भी एकदम से उच्छृंखल नहीं होता। एक रात जब सेनहिया उसके बिस्तर पर सो जाती है तो उसे देखकर वह तलवार निकाल लेता है। सामंती संस्कृति में मद्यपान को गलत नहीं माना जाता इसलिए इस गाथा में लोरिक को यमुनी कलवारिन के यहाँ जाकर मद्यपान करते दिखाया गया है। आदर्श वीर और आदर्श प्रेमी वीर लोरिक में दैवीय गुणों के साथ-साथ मानवीय गुण भी हैं और वह एक मध्यकालीन सामंती संस्कृति के प्रतिनिधि नायक के रूप में गाथा में वर्णित है।

2. नायिका मंजरी:- लोरिकायन लोकगाथा की नायिका मंजरी वीर लोरिक की धर्मपत्नी है। मंजरी के जन्म को देवीतुल्य अलौकिक दिखाया गया है। गाथा की पृष्ठभूमि अगोरी के राजा महरा द्वारा गाँव की सभी कन्याओं को जबर्दस्ती रनिवास उठाकर लाने और मंजरी के क्रम आने पर उत्पन्न हुयी परिस्थितियों पर आधारित है। महरा के इस दुष्कृत्य का मंजरी विरोध करती है और अपने सत्यबल के आधार पर लोरिक जैसा वीर और सुयोग्य वर का पता लगाकर उसे प्राप्त कर लेती है। वह एक बुद्धिमान और पतिव्रता स्त्री है। उसकी स्त्रियोचित लज्जाशीलता और मर्यादा का उदाहरण तब मिलता है जब लोरिक उसे देखने आता है और वह भागकर अपनी माँ के पास चली जाती है। मंजरी अत्यंत सुंदर है और उसकी अतुलनीय सुंदरता के साथ मंजरी में एक आदर्श भारतीय नारी के सारे गुणों का समावेश दिखाया गया है। मंजरी ऐसी पतिव्रता नारी है जिसे अपने से ज्यादा अपने पति की चिंता रहती है। वह तन औ मन दोनों से गंगाजल के समान शुभ और पवित्र है। अपने पूर्ववृत्त को वह अपने पति से स्पष्ट कह देती है और कुछ छिपाती नहीं। मंजरी को उसके पति के साथ ही परिवार के अन्य सदस्य भी प्रेम करते हैं। उसकी विदाई के प्रसंग का बहुत ही मार्मिक विवरण प्रस्तुत किया गया है। मंजरी एक आस्थावान नारी है तथा लोरिक के साथ वह महादेव, बंसरा और मनिया के मंदिर जाकर अपने सिंदूर की रक्षा की प्रार्थना करती है जिसे सुनकर सभी देवी-देवता प्रकट होकर उसे आशीर्वाद देते हैं। पति की रक्षा के लिए वह इनरावत हाथी से बहन का संबंध जोड़ लेती है। मंजरी एक वीरांगना स्त्री है जो अपने पति के पराक्रम पर प्रसन्न होती है तथा अपने आँचल में विषफल बांध लेती है ताकि युद्ध में पति के वीरगति प्राप्त होने पर वह जीवनलीला समाप्त कर ले। मार्कुंडी घाट पर लोरिक से वह वीरता का प्रदर्शन करने को कहती है मंजरी घर-गृहस्थी में भी निपुण स्त्री है। गाथा में उसके सतीत्व और चरित्रबल का विशद विवरण है। अनेक कठिनाइयों और विषम परिस्थितियों के बीच भी उसका चरित्र उज्जवल और आह्लादकारी है।

3. खलनायक राजा मोलागत:- राजा मोलागत अगोरी का विलासी, निरंकुश शासक है। राजाओं के बीच वह अपनी क्रूरता और दुष्कृत्यों के लिए कुख्यात है। आस-पास के राजा उसकी सहायता करते हैं। वह कोई भी कार्य विवेक-सम्मत नहीं करता। उसे जुआ खेलने की गलत आदत है और इसी चक्कर में वह भिखारी बन जाता है। पर वह एक कुशल राजनीतिज्ञ भी है। वह किसी भी युद्ध का नेतृत्व नहीं करता बल्कि दूसरे राजाओं को आगे कर देता है। मंजरी को पाने के लिए वह कई तरह के प्रयास करता है और लोरिक की शादी में कई तरह के विघ्न डालता है।

4. नायक के सहायक पात्र:-

संवरू- लोरिक का बड़े भाई संवरू का एक नाम धरमी भी है जो लोरिक की तरह वीर है और लोरिक का ध्यान रखता है। वह लोरिक के बारात की पूरी व्यवस्था करता है तथा अगोरी के राजा से युद्ध में लोरिक की सहायता के लिए तत्पर रहता है। उसके वीरता के अनेक प्रसंग इस गाथा में आए हैं। वह विषयभोग से दूर तथा आत्मनिग्रह पर ध्यान देने वाला पात्र है। कठयित- लोरिक के पिता कठयित भी लोरिक की तरह वीर पुरुष हैं। वह एक बार में 42 हाथ कूद सकता है। अगोरी में बारात

लगाने के समय उसकी वीरता का अद्भुत प्रसंग है। वह निर्भीक, भोजन प्रेमी तथा बुद्धिमान होने के साथ कामुक तथा व्यभिचारी भी है।

गंगिया नाई- यह लोरिक का सबसे विश्वसनीय मित्र है जो सहायता के लिए हर वक़्त तैयार रहता है। उसी चतुरता और तीक्ष्ण बुद्धि के सभी कायल हैं। नाई होने के चलते वह सबसे जल्दी संबंध स्थापित कर लेता है और सबकी खबर रखता है। वह लोरिक को बाधाओं से अवगत करवाता रहता है।

झीमल- यह मल्लाहों का ठेकेदार है जो राजा के आदेश को ठुकराकर सभी बारातियों को सोन पार करवाकर अगोरी पहुंचवा देता है।

अभोरिका- वीर लोरिका का यह पुत्र बाप के समान वीर और मातृभक्त है। अभोरिका आस्थावान पुरुष है। वह हरेवा-परेवा और कोलों को युद्ध में पराजित कर देता है।

इनके अलावा लोरिक के अन्य सहायक पात्रों में रानी सेनहिया, सहायिका अजई की पत्नी बिजवा, सभी बाराती, बाजा वाले, परिचारक आदि हैं।

5. नायिका के सहायक पात्र:-

महरा- धन-ऐश्वर्य से सम्पन्न अभिमानी, वीर मंजरी का पिता सामंती शान का प्रतीक है जो राजा का भी आदर नहीं करता। राजा से द्वेष और सभी कठिनाइयों के बीच भी वह अपने पराक्रम के बल पर आगे बढ़ता रहता है। महरिन- महरिन के चरित्र के जरिये यह दिखाया गया है कि अहीरों की स्त्रियाँ बुद्धिमान होती हैं। राजा के मंजरी को हासिल करने के हर प्रयास को महरिन अपनी बुद्धि से असफल कर देती है। बाराती और राजा मोलागत सब उसकी बुद्धिमता के कायल रहते हैं। वह मंजरी के विवाह के लिए पूरा प्रयास करती है।

अनपी- यह सुवाचन कि कन्या है जो हास-परिहास में निपुण है और नाक-नायिका मिलन में सहायिका बनती है। सुवाचन और मोहिनी पंडित- सुवाचन मंजरी का भाई और मोहिनी पंडित गाँव का पुजारी है। दोनों मिलकर मंजरी का विवाह तय करते हैं। सुवाचन वीर और साहसी है वहीं मोहिनी पंडित बुद्धिमान है।

कैथे की लड़की- कायस्थ की लड़की मंजरी की बालसखी है और अत्यंत साहसी है।

6. खलनायक के सहपात्र-

राजा बमदेव- यह कोटा का राजा है जो मोलागत के निमंत्रण पर सबसे पहले लोरिक से युद्ध करता है। मरदमल- यह राजा का आश्रयप्राप्त पहलवान है जिसे लोरिक से बलपूर्वक मंजरी को उठा लाने को राजा कहता है। राजा सखलेस तथा बघेल राजे- इन दोनों राजाओं को भी मोलागत लोरिक से लड़ने के लिए आमंत्रित करता है। राजा निरमल- मोलागत के बुलावे पर यह महान योद्धा लोरिक से लड़ने आता है। इसकी पत्नी जयकुंजर युद्ध से रोकती है पर अपनी वीरता पर अभिमान के चलते उसकी बात को नहीं मानता।

7. अन्य पात्र:-

अवांतर कथा पात्रों में महरा की प्रथम कन्या सोरही, गउरा का राजा सहदेव, सहदेव का पुत्र महदेव, खरफर, महीचन तेली और उसकी लड़की, अगोरी का निवासी चुगलखोर चुगुला सोनार, बिजुली गाँव का वीर सेवहर, राजा महुवर आदि हैं। गाथा के दिव्य पात्रों में ब्रह्मा, गोठानी गाँव के महादेव, गोठानी की ही बंसरा देवी, अगोरी की मनिया मां तथा दुर्गा का नाम उल्लेखनीय है। इनके अलावा मानवेतर चरित्रों में इनरावत हाथी, दानव, चंद्रमा, शुक्र, तरई तथा वासुकी नाग। मंगरा घोडा, सुकली कुतिया, हंसा का जोड़ा आदि हैं।

निष्कर्ष:- 'लोरिकायन' लोकगाथा के कथानक में आए हुये पात्रों की संख्या कथावस्तु और इसके विस्तृत कलेवर के अनुरूप है। पूरी गाथा में किसी भी पात्र का समावेश निरर्थक नहीं लगता। कथानक के मूल भाव के अनुसार ही पात्रों का चरित्र, व्यक्तित्व तथा प्रवृत्ति का निर्धारण होता है। लोकगाथा में आए हुये सभी पात्र कथानक के अनुसार अपने उद्देश्य में सफल हुये हैं। कथानक में मानवीय। दिव्य के अलावा मानवेतर पात्रों का समावेश हुआ है। इन सभी पात्रों के विविधतापूर्ण प्रसंगों के चलते पूरे कथानक में एक प्रवाह बना रहता है।

संदर्भ-सूची :-

1. सिन्हा, सत्यव्रत (1957). भोजपुरी लोकगाथा, हिंदुस्तानी अकादमी, प्रयागराज
2. पाण्डेय, श्याम मनोहर (1984), लोक महाकाव्य लोरिकायन, साहित्य भवन प्राइवेट लिमिटेड, प्रयागराज
3. केसरी, डॉ अर्जुनदास (1980), लोरिकायन, लोकरुचि प्रकाशन, सोनभद्र
4. केसरी, डॉ अर्जुनदास (2019), लोरिकायन : एक अध्ययन, लोकरुचि प्रकाशन, सोनभद्र
5. उपाध्याय, कृष्णदेव (2008), भोजपुरी लोकसाहित्य, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी